Visit **Dwarkadheeshvastu.com** For

FREE **Vastu Consultancy, Music, Epics, Devotional Videos**
Educational Books, Educational Videos, Wallpapers

****

All Music is also available in **CD** format. **CD Cover** can also be print with your Firm Name

****

We also provide this whole Music and Data in **PENDRIVE** and **EXTERNAL HARD DISK.**

Contact : Ankit Mishra (+91-8010381364, dwarkadheeshvastu@gmail.com)

exy 'kkfr ikB

मंगल यंत्र

ॐ नमो भगवते सकलगुणात्मशक्ति युक्ताय भूमिपुत्राय योगपीठात्मने नमः ॥

परिचय

मंगल ग्रह का प्रभाव और प्राकृतिक स्वभाव अन्य ग्रहों से सर्वथा विपरीत है। यह कई बातों में पृथ्वी के समान है। इसी कारण इसको भूमिपुत्र (*मंगलो भूमि-पुत्रश्च*) भी कहा गया है। यह अपनी धुरी पर 24 घंटा, 37 मिनट और 22 सेकंड में एक चक्र घूमता है। सूर्य के चारों ओर 687 दिनों अथवा 2 वर्षों में एक परिक्रमा पूरी करता है। यह गहरे लाल रंग का ग्रह है। इसका व्यास लगभग 4,230 मील है। यह सूर्य से 14,15,50,000 मील की दूरी पर है। इसके दो उपग्रह हैं।

मंगल शौर्य का प्रतिनिधि, युद्ध का देवता तथा देवताओं की सेना का अध्यक्ष है। यह गर्म स्वभाव का, धैर्यहीन, झगड़ालू

और लड़ाका है। कृशकाय, दृढ़, नमनीय एवं लंबा है। यह चुस्त है, जैसा कि एक सैनिक को होना चाहिए। यह मुंहफट है। इसमें सहनशीलता है। किंतु क्रोधित होने पर यह सामने वाले, अर्थात् कोपभाजन व्यक्ति की स्थिति अथवा पद की तनिक भी चिंता किए बिना अपना सारा जहर उगल देता है।

मंगल मेष और वृश्चिक राशियों का स्वामी है। मेष राशि के जातक में क्योंकि उतावलापन होता है, इसलिए उसमें वैसी कुटिलता नहीं आती, जैसी कि वृश्चिक राशि के जातक में हुआ करती है। हां, वह अनुशासित होने के बावजूद हठी और शीघ्र रुष्ट होने वाला होता है। मंगल के दुर्गुणों को वृश्चिक राशि में पूर्ण रूप से देखा जा सकता है।

पौराणिक आख्यान

मंगल के विषय में एक पौराणिक आख्यान है कि पृथ्वी को दुखित देखकर उसके पिता ब्रह्मा ने उसे पुत्र-रूप मेढक में दिया। पुत्र-रूप में मेढक को देखकर पृथ्वी प्रलाप और रुदन करने लगी। उसकी इस अवस्था से द्रवीभूत होकर विधाता (ब्रह्मा) ने मेढक को मानव-रूप में बदल दिया। पृथ्वी के उस पुत्र का नाम 'भौमासुर' हुआ। भौमासुर ने जब अपने अत्याचारों से पृथ्वी और आकाशमण्डल को मथ डाला, त्रसित एवं उत्पीड़ित कर डाला, तब पृथ्वी ने फिर पुकार की। इस बार उसके पिता ने भौम नामक एक दूसरा पुत्र पृथ्वी को दिया और कहा, "पुत्री! यह

भौम भौमासुर की भांति किसी को संतप्त नहीं करेगा। बल्कि पृथ्वी पर सब सुख देगा तथा सभी के दुखों का मोचन करेगा। इससे पुरुष ही नहीं, स्त्रियां भी प्रेम करेंगी। वह इसे हमेशा अपने हृदय से लगा कर रखेंगी।'' तभी से 'मंगलसूत्र' नाम का आभूषण नारियों के सुहाग का प्रतीक बना हुआ है। संभव है मंगलसूत्र पहनने का उद्देश्य मंगल की क्रूर दृष्टि से स्त्रियों को मुक्त करना रहा हो।

एक अन्य कथा के अनुसार, यह वाराह कल्प की बात है, वाराह अवतार धारण कर जब श्रीविष्णु ने हिरण्याक्ष को मारकर पृथ्वी का उद्धार किया, तो पृथ्वी देवी के मन में श्रीविष्णु को पति के रूप में वरण करने की इच्छा हुई। लेकिन वाराहावतार के रूप भगवान् का वरण असंभव था— क्योंकि उनका तेज करोड़ों सूर्यों के समान होने के कारण असह्य था। पृथ्वी देवी की कामना को पूर्ण करने के लिए भगवान ने सौम्य एवं मनोरम रूप बना लिया है और एक वर्ष तक उनके (पृथ्वी देवी) साथ एकान्त में रहे। इस प्रकार भगवान् विष्णु और पृथ्वी देवी के संयोग से मंगल ग्रह की उत्पत्ति हुई। यह कथा गणेश पुराण में वर्णित है। पूजा के प्रयोग में मंगल को

भरद्वाज गोत्रोत्पन्न कहकर संबोधित किया जाता है।

यही वह भौम (मंगल) है, जो विश्व-कल्याण के लिए, धर्म और सत्य की स्थापना के लिए, जगत् में विहार करता है। धर्म विमुखों को भयानक दंड देने के कारण ही मंगल को अकरुण, क्रूर और कठोर कहा जाता है। जबकि है वास्तव में यह मंगलदायक।

मंगल बल-विक्रम का देवता माना जाता है। श्रीहनुमान् की भांति पृथ्वीनंदन मंगल की भी आराधना की जाती है। बलिदान का स्वरूप, त्याग का अवतार तथा रोग-पीड़ा का विनाशक है मंगल। वैज्ञानिक इसे शौर्य और शक्ति का ग्रह कहते हैं।

मंगल के कारक-गुण

मंगल ग्रह पुरुष जाति, रक्त वर्ण, दक्षिण दिशा का स्वामी, अग्नि तत्व वाला तथा पित्त प्रकृति का है। यह धैर्य-पराक्रम का स्वामी, भाई-बहन का कारक तथा रक्त-शक्ति का नियामक है। उत्तेजना प्रधान होने के कारण ही इसे पापीग्रह माना गया है।

ज्योतिष शास्त्र के विद्वानों की दृष्टि में मंगल सेनापति, नेता, अधिपति, देवता और बल-विक्रम का प्रतिनिधि है। यह युद्ध का निर्झर है, शक्ति का विधाता है, तरुणाई का मूलाधार है, भयानकता और क्रूरता का कोष है। अति चपल एवं चंचल है, देश-प्रेम और साहस का केंद्र बिंदु है, आवेश का तूफान तथा परिपुष्टता का भंडार

है। इसे विजय का सेतु कहकर भी पुकारते हैं। यह क्षत्रिय जाति का है।

मंगल एक राशि पर डेढ़ मास रहता है। इसकी स्वराशि 1 और 8 है। यह मकर में उच्च राशि का तथा कर्क राशि में नीच का माना जाता है। इसके मित्र सूर्य, चंद्रमा और बृहस्पति हैं। यह अनैतिक प्रेम का प्रतिनिधि भी है। यह पुलिस, सेना, शस्त्रागार तथा शल्योपचार कर्मियों का प्रिय अध्येता है। इसके अनुयायी चोर, अकरुण, फांसी देने वाले जल्लाद आदि होते हैं। यह ग्रह अधिकार को मुट्ठी में रखने वाला, आदेश का पालन कराने वाला, अनुशासन तथा राज्यसत्ता में रहकर कठोर शासन कराने वाला होता है। राजनैतिक क्षेत्र में प्रवेश करके यह नेतृत्व भी करता है।

व्रत-विधि

वैसे तो मंगल व्रत कोई भी कर सकता है। लेकिन कुछ विशेष कामनाओं की पूर्ति के लिए मंगल व्रत का विधान है, जैसे कि—

- पुत्र की अभिलाषा रखने वाली स्त्री को प्रत्येक मंगलवार के दिन व्रत रखना चाहिए। इस व्रत को मार्गशीर्ष अथवा वैशाख मास से प्रारंभ करना प्रशस्त माना गया है। इस प्रकार एक वर्ष तक प्रत्येक मंगलवार को व्रत रखते हुए पूजन करना चाहिए। एक वर्ष बाद व्रत की समाप्ति पर तिल से होम करना चाहिए तथा 50 ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए। इस प्रयोग से

स्त्री सौभाग्यशाली पुत्रों के मातृत्व को प्राप्त करती है।

- धन-प्राप्ति तथा ऋण-नाश हेतु पुरुषों को भी मंगल का व्रत करना चाहिए।
- मंगल का व्रत करने से रोग नष्ट होते हैं। विपत्ति, दुर्घटना तथा अल्प एवं अकालमृत्यु का भय दूर होता है। स्वास्थ्य एवं दीर्घायु प्राप्त होती है।

पूजास्थल को गोबर से लीपें। प्रातःकाल उठकर अपामार्ग (ओंगा) की दातुन करें। तिल और आंवले का चूर्ण लगाकर स्नान करें। लाल रंग के स्वच्छ वस्त्र धारण करें। लाल चावलों का अष्ट दल कमल बनाएं। उस पर स्वर्ण की मूर्त्ति बनवाकर प्रतिष्ठा करें। लाल चावल, लाल पुष्प, लाल चंदन एवं लाल धान्य (गेहूं-सूजी

आदि) से बने पदार्थों का भोग लगावें। पत्नी सहित मंगल देवता का ध्यान करते हुए विधिवत् पूजन करें। निम्नांकित इक्कीस नामों का जप करें—

- ❑ ॐ मंगलाय नमः
- ❑ ॐ भूमिपुत्राय नमः
- ❑ ॐ ऋणहन्त्रे नमः
- ❑ ॐ धनप्रदाय नमः
- ❑ ॐ स्थिरासनाय नमः
- ❑ ॐ महाकायाय नमः
- ❑ ॐ सर्वकामार्थ साधकाय नमः
- ❑ ॐ लोहिताय नमः
- ❑ ॐ लोहिताक्षाय नमः
- ❑ ॐ सामगानकृपाकराय नमः
- ❑ ॐ धरात्मजाय नमः
- ❑ ॐ कुजाय नमः

- ☐ ॐ भौमाय नमः
- ☐ ॐ भूमिजाय नमः
- ☐ ॐ भूमिनन्दनाय नमः
- ☐ ॐ अंगारकाय नमः
- ☐ ॐ यमाय नमः
- ☐ ॐ सर्वरोगहारकाय नमः
- ☐ वृष्टिकत्रे नमः
- ☐ ॐ पापहत्रे नमः
- ☐ ॐ सर्वकाम फलदात्रे नमः ।

नाम जप के साथ सुख-सौभाग्य के लिए प्रार्थना करें। पूजन-स्थल पर शुद्ध घी का, चार बत्तियों का चौमुखा दीपक जलाएं। इक्कीस मंगलवार का व्रत करें और इक्कीस लड्डुओं का भोग लगाकर वेद के ज्ञाता सुपात्र ब्राह्मण को दें। केवल एक बार रात्रि को भोजन करें।

व्रत पूर्ण होने अथवा इच्छा पूर्ति होने पर व्रत का उद्यापन करें। इक्कीस ब्राह्मणों को भोजन कराकर यथाशक्ति दान करें। आचार्य को सामर्थ्यानुसार दक्षिणा दें। लाल बैल का दान श्रेयस्कर माना जाता है। फिर स्वयं भोजन करें।

पूजन विधि

मंगलवार के दिन, जब स्वाति नक्षत्र हो, प्रातः स्नानादि से निवृत्त होकर पूजास्थल पर मंगल यन्त्र का निर्माण करें या मंगल देव की मूर्ति बनाएं। मंगल की मूर्ति का षोडोपचार विधि से पूजन करें। पूजन में लाल पुष्पों का प्रयोग करें। पूजन करते समय '**ॐ अंगारकाय नमः**' मंत्र का निरन्तर उच्चारण करें। लाल वस्त्र पहनावें। गुड़, घी, गेहूं से बने पदार्थों का भोग लगाएं। पृथ्वी पर शयन करें। सातवें मंगलवार को मंगल की मूर्ति का पूजन-अर्चन करें। मूर्ति स्वर्ण की हो तो उसे दो लाल वस्त्रों से आच्छादित करें। षट्गंध, धूप, पुष्प, लाल चन्दन, रोली मिश्रित

अक्षत, दीप आदि से पूजन करें। व्रत की कथा श्रवण करें। सफेद कसार का भोग लगाएं। तिल, चीनी, घी द्वारा 'ॐ कुजाय नमः स्वाहा' मंत्र से हवन करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं। मंगल की मूर्ति ब्राह्मण को दक्षिणा में दें। मंगलग्रहजनित सभी अनिष्टों की समाप्ति होती है। जीवन-धन, जन, सम्पत्ति आदि की प्राप्ति होती है। पूजक सभी ऋणों से उऋण होकर धन-लक्ष्मी को प्राप्त करता है। स्त्री तथा कन्याओं के लिए यह व्रत विशेष लाभप्रद है। वे सदा सुहागिन रहती हैं। स्त्रियों को मंगलवार के दिन पार्वती-मंगल, गौरी-पूजन करके मंगलवार व्रत-विधि कथा अथवा मंगला गौरी व्रत-कथा का श्रवण करना चाहिए।

व्रत-कथा

एक बार नैमिषारण्य तीर्थ में अट्ठासी हजार मुनि एकत्र होकर सूतजी से पूछने लगे—हे महामुने! आपने हमें अनेक पुराणों की कथाएं सुनाई हैं, अब कृपा करके हमें ऐसा व्रत और उसकी कथा बताएं जिसके करने से सन्तान की प्राप्ति हो तथा मनुष्यों के रोग-शोक, अग्नि, सर्प दुःख आदि का भय दूर हो।

श्री सूतजी ने कहा—हे मुनियो! आपने लोक-कल्याण के लिए बहुत ही उत्तम बात पूछी है। एक बार युधिष्ठिर ने हस्तिनापुर की राजसभा में भगवान श्रीकृष्ण से लोक-कल्याण के लिए यही प्रश्न किया था। तब भगवान श्रीकृष्ण ने कहा था, हे राजन्! मैं एक

प्राचीन इतिहास सुनाता हूं, आप उसे ध्यानपूर्वक सुनें—

कुण्डलपुर नामक एक नगर में नन्दा नामक एक महा बुद्धिमान ब्राह्मण रहता था। उसका गुजारा तो जैसे-तैसे चल जाता, परन्तु वह संतान न होने के कारण अत्यंत दुखी रहता था। उसकी पत्नी सुनन्दा पतिव्रता थी, वह भक्तिपूर्वक अंजनी पुत्र श्रीहनुमानजी की आराधना करती थी।

एक मंगलवार को गृहकार्य की अधिकता के कारण वह हनुमान जी को भोग न लगा सकी। इस पर उसे बहुत दुख हुआ। उसने भोजन नहीं किया। प्रण किया कि अब मैं अगले मंगलवार को हनुमानजी का भोग लगाकर ही अन्न-जल ग्रहण करूंगी।

ब्राह्मणी सुनन्दा प्रतिदिन भोजन बनाती, श्रद्धापूर्वक पति को खिलाती, परन्तु स्वयं भोजन ग्रहण नहीं करती और मन-ही-मन श्री हनुमानजी की आराधना करती रहती। इसी प्रकार छः दिन बीत गए, ब्राह्मणी सुनन्दा अपने प्रण के अनुसार भूखी-प्यासी, निराहार रही। परन्तु सातवें दिन अर्थात् मंगलवार को वह प्रातःकाल ही बेहोश होकर गिर पड़ी।

सुनन्दा की इस असीम भक्ति से श्री हनुमान जी बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने प्रकट होकर सुनन्दा से वर मांगने को कहा।

सुनन्दा विह्वल हो अपने इष्ट के चरणों में गिर पड़ी, "हे प्रभु! मेरे कोई सन्तान नहीं है। कृपा करके मुझे सन्तान

प्रदान कर अनुगृहीत करें।''

श्री हनुमानजी ने कहा—''तेरी इच्छा पूर्ण होगी। तेरे यहां एक ऐसी कन्या जन्म लेगी, जिसके अष्टांग प्रतिदिन सोना दिया करेंगे।''

इस प्रकार वर देकर श्री हनुमानजी अन्तर्ध्यान हो गए।

समय बीता। सुनन्दा ने एक कन्या को जन्म दिया। दसवें दिन ब्राह्मण ने उस बालिका का नामकरण-संस्कार कराया। कुलपुरोहित ने उस बालिका का नाम रत्नबाला रखा।

रत्नबाला का अष्टांग प्रतिदिन सोना देता था। उस सोने से नन्दा ब्राह्मण बहुत धनवान हो गया। ब्राह्मणी सुनन्दा अभिमानिनी हो गई।

अब रत्नबाला दस वर्ष की हो चुकी

थी। एक दिन सुनन्दा ने नन्दा ब्राह्मण से कहा—"पुत्री विवाह योग्य हो गई है, अतः कोई सुन्दर तथा योग्य वर देखकर उसका विवाह कर दें।" यह सुनकर नन्दा ब्राह्मण बोला—"अभी तो रत्नबाला बहुत छोटी है।"

ब्राह्मण ने काफी प्रयास किया कि रत्नबाला का छोटी उम्र में विवाह न हो, लेकिन सुनन्दा ने अपने पति को वैसा करने के लिए विवश कर दिया।

ब्राह्मण ने दूत को बुलाया और अपना आशय समझाया। दूत स्वामी की आज्ञा पाकर वर खोजने के लिए चल पड़ा। अनेक नगर घूमने के बाद उसने पम्पई नगर में एक सुन्दर ब्राह्मण युवक को देखा। इसका नाम सोमेश्वर था। जो बहुत गुणवान था। दूत ने उस

सुन्दर व गुणवान ब्राह्मण पुत्र के बारे में अपने स्वामी को पूर्ण विवरण दिया।

सोमेश्वर के साथ रत्नबाला का विवाह सम्पन्न हो गया।

बेटी के ससुराल जाने की बात सोच कर ब्राह्मण का मन भारी हो उठा। उसका कारण पुत्री से प्रेम कम स्वर्ण का लोभ ज्यादा था। ब्राह्मण ने निश्चय कर लिया कि वह रत्नबाला को उसके ससुराल नहीं जाने देगा। उसने अपने जामाता का वध करने के लिए अपने एक विश्वस्त कर्मचारी को तैनात कर दिया। रत्नबाला को अपने ससुराल पहुंचाने के बहाने से वह उनके साथ था। मौका मिलते ही उसने सोमेश्वर का वध कर दिया। यह समाचार सुनकर रत्नबाला स्तंभित रह गई। ब्राह्मण नन्दा

ने भी खूब नाटक किया। वह रत्नबाला को घर ले जाना चाहता था। लेकिन रत्नबाला ने सती होने का फैसला कर लिया। सबने बहुत समझाया। लेकिन रत्नबाला अपने निश्चय से न टली। वह सोमेश्वर का शव लेकर चिता पर बैठ गई। उसने जब अग्नि रूप में प्रकट होने के लिए सूर्य का आह्वान किया, तो स्वयं मंगलदेव प्रकट हो गए। उन्होंने रत्नबाला से वर मांगने को कहा। मंगल की कृपा से रत्नबाला को पता चल चुका था कि उसके पति की मृत्यु के पीछे किसका हाथ था।

रत्नबाला ने अपने पिता को क्षमा कर दिया। उसने अपने पिता के समक्ष प्रकट नहीं होने दिया कि वह सब जान गई है। मंगल की कृपा से रत्नबाला ने

अपने पति को भी जीवित कर लिया। उसे मंगलदेव ने अखंड सौभाग्यवती होने का वरदान दिया। इसके बाद सोमेश्वर और रत्नबाला दोनों ने आजीवन मंगल का व्रत किया। सुख-ऐश्वर्य भोग कर मृत्यु के बाद वे स्वर्ग लोक को गए।

जो मंगलवार को मंगलदेव एवं श्री हनुमान का पूजन करता है, उसके जीवन में अमंगल का प्रवेश नहीं होता।

इति मंगलवार व्रत-कथा

मंगलवार व्रत की आरती

मंगल मूरति जय जय हनुमन्ता,
मंगल-मंगल देव अनन्ता।

हाथ वज्र और ध्वजा विराजे,
कांधे मूंज जनेऊ साजे।
शंकर सुवन केसरी नन्दन,
तेज प्रताप महा जगवन्दन॥

लाल लंगोट लाल दोउ नयना,
पर्वत सम फारत है सेना।
काल अकाल युद्ध किलकारी,
देश उजारत क्रुद्ध अपारी॥

रामदूत अतुलित बलधामा,
अंजनि पुत्र पवनसुत नामा।
महावीर विक्रम बजरंगी,
कुमति निवार सुमति के संगी॥

भूमि पुत्र कंचन बरसावे,
राजपाट पुर देश दियावे।
शत्रुन काट-काट महिं डारे,
बन्धन व्याधि विपत्ति निवारे॥
आपन तेज सम्हारो आपै,
तीनों लोक हांक ते कांपै।
सब सुख लहैं तुम्हारी शरना,
तुम रक्षक काहू को डर ना॥
तुम्हरे भजन सकल संसारा,
दया करो सुख दृष्टि अपारा।
ब्रह्मदण्ड कालहु को दण्डा,
तुम्हरे परसि होत सब खण्डा॥
पवन पुत्र धरती के पूता,
दोउ मिल काज करो अवधूता।
हर प्राणी शरणागत आए,
चरण कमल में शीश नवाए॥

रोग शोक बहु विपति घराने,
दुःख दरिद्र बन्धन प्रकटाने।
तुम तज और न मेटनहारा,
दोउ तुम हो महावीर अपारा॥
दारि दहन और ऋण त्रासा,
करो रोग दुःख स्वप्न विनाशा।
शत्रुन करो चरन के चेरे,
तुम स्वामी हम सेवक तेरे॥
विपति हरन प्रभु मंगल देवा,
अंगीकार करो यह सेवा।
मुद्रित भक्त विनति यह मोरी,
देउ महाधन लाख करोरी॥

॥ दोहा ॥

श्री मंगल की आरती हनुमत सहित जो गाए।
होई मनोरथ सिद्ध सब अन्त विष्णुपुर जाए॥

अनिष्ट निवारक मंगल यंत्र

मंगलवार के दिन प्रात:काल ब्रह्म मुहूर्त में उठकर, नित्य कर्म से निवृत्त होकर शुद्ध-लाल आसन पर बैठें। अनार की लेखनी (कलम) द्वारा अष्टगंध (श्वेत चंदन, रक्त चंदन, अगर, तगर, केसर, कस्तूरी, कपूर और गोरोचन) से भोजपत्र पर यंत्र का लेखन करें।

8	3	10
9	7	5
4	11	6

इसे मंगलवार के ही दिन ताम्रपत्र के कवच में बंद करके, लाल डोरे में गुहाकर पुष्प, धूप, दीप आदि से पूजन कर, शुभ मुहूर्त्त में धारण करें। इस यंत्र को धारण करने से मंगल पीड़ा नहीं देता। गर्गाचार्य ने इस यंत्र को सभी अरिष्टों को नष्ट करने वाला माना है। यदि पहले से मंगल का कोई प्रकोप हुआ तो वह भी इसे धारण करने से शांत हो जाता है।

भौम मंगल स्तोत्र

भौमो दक्षिणदिक्त्रिकोणयमदिग्विघ्नेश्वरो रक्तभः
स्वामी वृश्चिक-मेषयोः सुरगुरुश्चाऽर्कः शशी सौहृदः।
ज्ञोऽरिः षट्त्रिफलप्रदश्च वसुधा स्कन्दौ क्रमाद् देवते
भारद्वाजकुलोद्भवः क्षितिसुतः कुर्यात् सदा मङ्गलम्॥

मंगलीक दोष

विवाह के लिए कुंडलियों को मिलाते समय इस बात का विशेष ध्यान रखना पड़ता है कि दोनों में से एक मंगलीक न हो। ऐसी स्थिति में, भविष्य में कोई भी दुर्घटना होने की संभावना सदैव बनी रहती है। जबरदस्ती कुंडली के मेलान के लिए मंगलीक दोष से युक्त कुंडली को बदलवाने की भूल कभी नहीं करनी चाहिए तथा मंगलीक दोष का विचार भी किसी अनुभवी ज्योतिषी से ही करवाना चाहिए। कारण ? मंगल के संदर्भ में वैसी ही भ्रांतियां समाज में व्याप्त हैं जैसी शनि के बारे में। मंगलीक विचार के लिए मंगल ग्रह के द्वादश भावफल इस प्रकार हैं—

- मंगल यदि लग्न में हो तो जातक मंगलीक होता है। यदि बली अर्थात् अपनी स्व-उच्चादि राशि में हो तो जातक साहसी, आत्मविश्वास से युक्त, स्वतन्त्र विचारों का तथा पराक्रमी होगा। अन्य राशियों में स्थित मंगल के प्रभाव से वह हठी, घावयुक्त शरीर वाला, झगड़ालु, क्रोधी, स्त्री सुख में बाधा वाला और उच्छृंखल स्वभाव का होगा। उसे आग, बिजली एवं दुर्घटनाओं से भय रहेगा। अगर बली मंगल लग्न में हो तो जातक वृद्धावस्था में भी युवाओं की भांति प्रतीत होगा।
- मंगल द्वितीय भाव में हो तो जातक कठोरवाणी से युक्त, गरम-कुत्सित भोजन करने वाला तथा परिवार में

कलह-क्लेश करने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति धन-संचय नहीं कर पाता। उसके मुख पर चिह्न होता है। नेत्रों में लाली रहती है।

- यदि मंगल बली हो तो उसे कृषि कर्म, भूमि, सैनिक सेवा, शल्य-चिकित्सा एवं बिजली के कार्यों से धन लाभ होता है।
- मंगल तृतीय भाव में हो तो जातक सुखी, पराक्रमी, धनी, प्रसिद्ध तथा अपने बाहुबल से अपना भाग्य बनाने वाला होता है, परन्तु वह भातृ सुख से वंचित रहता है।
- **वैवाहिक विचार में इसे सुख का भाव कहते हैं। मंगल चतुर्थ भाव में हो तो जातक मंगलीक होता है,**

अतः स्त्री सुख में बाधा रहती है। जीवन साथी से मतभेद बने रहते हैं। निर्बल मंगल हो तो माता, मित्रों व सम्बंधियों से सुख प्राप्त नहीं होता। वाहन, आवास तथा अचल सम्पत्ति से हानि होती हैं।

- मंगल पंचम भाव में हो तो जातक की जठराग्नि प्रबल होती है। उसे भूख अधिक लगती है तथा वह उदरशूल से भी पीड़ित रहता हैं। ऐसा व्यक्ति चुगलखोर, विपरीत बुद्धि वाला, उद्दण्ड, शिक्षा रहित तथा पुत्र सुख से वंचित होता है। **स्त्री की कुण्डली में मंगल पांचवें स्थान पर हो तो उसे जान लेवा प्रसव-पीड़ा से गुजरना पड़ता है।**

- मंगल षष्ठम भाव में हो तो जातक प्रबल जठराग्नि वाला, शत्रुओं का दमन करने वाला, निर्भय, कामी, बलवान तथा धनी होता है। अगर किसी शासक की कुण्डली में छठे स्थान पर प्रबल मंगल हो तो वह अपने विरोधियों को परास्त करता है। छठे भाव में स्थित निर्बल मंगल मातृ कुल को कष्ट, कमर में पीड़ा रक्त विकार तथा विवाद में हानि कराता है।
- **मंगल सप्तम भाव में हो तो जातक मंगलीक होने के कारण स्त्री संबंधी कष्ट से पीड़ित रहता है।** विवाह में विघ्न उपस्थित होते हैं। ऐसा जातक व्यापार में असफलता प्राप्त करने वाला, साझेदारी में हानि उठाने वाला

तथा चिन्ताओं से युक्त होता है। वैवाहिक विचार में यह भाव अत्यंत महत्वपूर्ण है।

- मंगल अष्टम भाव में हो तो जातक रक्त विकार से पीड़ित, निन्दक, रोगी, शोक से पीड़ित, धनहीन, बवासीर रोग से कष्ट उठाने वाला तथा स्त्री सुख से रहित होगा। ऐसा व्यक्ति मंगलीक होता है। निर्बल मंगल उसे ऋणग्रस्त बना देता है।

स्त्री जन्मांग में यह भाव अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। इस भाव के बारे में सभी ज्योतिषग्रंथों की एक ही राय है कि यह अनिष्टकारी होता है। पराशर के अनुसार, धनहानि एवं पराजय होती है। भाव सिद्धांत के अनुसार, जीवन

साथी की मृत्यु या हत्या होने का भी इसमें योग बनता है।

- मंगल नवम भाव में (निर्बल) हो तो लोग जातक से द्वेष करते हैं। धर्म-कर्म में इसकी श्रद्धा नहीं होती। यह भातृ सुख से वंचित रहता है। बली मंगल होने से जातक गणेश-हनुमान का भक्त, तेजस्वी तथा उपकारी होता है।
- दशम भाव में मंगल का उत्तम फल है। दशमस्थ मंगल के फल से जातक प्रतापी, साहसी, परोपकारी, यश एवं मान प्राप्त करने वाला, अपने ही उद्यम से कार्य-सिद्ध करने वाला तथा धन-सम्पत्ति से युक्त होता है। यदि मंगल स्व अथवा उच्च राशि का हो तो जातक राजयोग का सुख भोगता है।

- मंगल एकादश भाव में हो तो जातक धनी, प्रतापी, शूर, शोक-रहित, सुखी तथा उच्च वर्ग में प्रभाव रखने वाला होता है। शत्रु उसके प्रताप से संतप्त रहते हैं। वह उचित-अनुचित दोनों मार्गों से धनार्जन करता है।
- **मंगल द्वादश भाव में हो तो जातक मंगलीक होता है।** वह नेत्र संबंधी रोगों से पीड़ित, अपव्यय करने वाला तथा चुगलखोर होता है। उसके शत्रु अधिक होते हैं। **स्त्री सुख में बाधा होती है।** कलह, कलेश व झगड़े में धन की हानि होती है। ऐसे व्यक्ति का सारा धन चोरी, मुकदमेबाजी एवं अग्निकांड में नष्ट हो जाता है।

यदि मंगल 1, 2, 4, 7, 8 या 12वें

भाव में हो और बृहस्पति द्वारा दृष्ट हो या फिर दोनों एक-दूसरे से सप्तम में हों तो भी मंगल दोष होता है। इसी प्रकार, स्वराशि का मंगल न्यून घातक है, परंतु मेष का मंगल तीव्र घातक होता है।

॥ विशेष ॥

स्त्री जातक के फल भी पुरुष जातक के समान होते हैं, किन्तु जो फल स्त्री के विषय में घटित न हो सके, उसका फल उसके पति के विषय में बताना चाहिए। विशेषकर अष्टम स्थान से वैधव्य का विचार, जन्म लग्न से शरीर का विचार, सप्तम स्थान से सौभाग्य का विचार और पंचम स्थान से संतान का विचार करना चाहिए।

मंगल दोष नहीं

- ❑ यदि शुक्र, मंगल और बृहस्पति एक स्थान पर हों, परस्पर सप्तम में हों, या केंद्र में हो।
- ❑ यदि कन्या राशि में 1, 2, 4, 7, 8 या 12वें भाव में मंगल हो और वर के इन्हीं भावों में शनि हो।
- ❑ यदि 2 या 7 राशि में मंगल चतुर्थ या सप्तम भाव हो।
- ❑ यदि मंगल चतुर्थ या सप्तम भाव में किसी पापग्रह द्वारा दृष्ट या युक्त न हो और इन भावों में 1,4,8 और 10 राशि हो।
- ❑ यदि मिथुन का कन्या पर मंगल द्वितीय भाव का हो।

मंगलीक दोष निवारण

मंगलीक दोष के कारण यदि विवाह में किसी भी प्रकार की परेशानी हो रही हो, तो इन उपायों को करें, निश्चित रूप से लाभ होगा।

॥ प्रयोग एक ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्॥

सौभाग्य एवं मनोनुकूल वर या वधू के लिए गायत्री-उपासना अवश्य करें।

प्रतिदिन प्रातः शुद्ध चित्त होकर कुशा या कम्बल के आसन पर बैठकर उपर्युक्त गायत्री मंत्र का 11 माला जाप करने से 80 या 185 दिन के अंदर विवाह निश्चित हो जाता है।

॥ प्रयोग दो ॥

हे गौरि शंकरार्धांगी यथा त्वं शंकरप्रिया।
तथा मां कुरू कल्याणि कांतकांता सुदुर्लभा॥
अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमा नयति कश्चन
ससत्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥
कात्यायनि महामाये महायोगिन्यधीश्वरि।
नन्दगोपसुतं देवि! पतिं मे कुरुते नमः॥

इस मंत्र का प्रतिदिन 108 बार जाप करें, 10 दिनों में विवाह होने का पूर्ण योग बनेगा। किसी भी रूप में जप करना न छोड़ें।

॥ प्रयोग तीन ॥

ॐ ह्रीं ह्रीं सूर्याय सहस्त्रकिरणाय।
मनोवांछितं देहि देहि स्वाहा॥
ॐ शंकराय सकल जन्मार्जितपाप
विध्वंसनाय पुरुषार्थचतुष्टयलाभाय च
पतिं मे देहि कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ देवेन्द्राणि नमस्तुभ्यं देवेन्द्रप्रियभामिनी।
विवाहं भाग्यमारोग्यं शीघ्रं लाभं च देहि मे॥

पंचमुख दीपक, पांच लाल गुलाब के फूल, पांच पूर्ण लाल सेब, पांच लाल मिष्ठान्न लेकर मंगली कन्या 108 दिन तक लगातार यदि उपरोक्त स्तोत्ररूप मंत्र का जाप करे, तो निश्चित रूप से उसका जल्द विवाह हो जाएगा। शरीर की अशुद्धि में कन्या की माता जाप कर सकती है।

॥ प्रयोग चार ॥

रक्ष रक्ष जगन्मातर्देति मंगलचण्डिके।
हारिके विपदां राशौ हर्ष मंगलकारिके॥
हर्षमंगलदशायां च हर्षमंगलदायिके।
शुभ मंगलदशे देवि! शुभ मंगलचण्डिके॥

प्रत्येक मंगलवार को पंचमुखी दीपक शुद्ध देशी घी में जलाकर लाल वस्त्र धारण करके संध्या समय 108 बार जाप करें।

॥ प्रयोग पांच ॥

मंगले मंगलार्हे च सर्वमंगलमंगले।
सदा मंगलदे देवि सर्वेषां मंगलालये॥

अत्यंत प्रभावकारी मंत्र 21 दिनों तक लगातार 11 माला प्रातः 11-48 से आरम्भ करें—बुधवार को छोड़कर, अवश्य सफलता मिलेगी।

॥ प्रयोग छः ॥

ॐ बह्मिप्रेयसी स्वाहा।

किसी भी दिन, बुधवार को छोड़कर, 11.50 पर या 12 बजे आरम्भ करें तो नवरात्रि तक विवाह होने का पूर्ण योग बन जाएगा।

॥ प्रयोग सात ॥

ॐ ह्रीं योगिनि योगिनि योगेश्वर योगेश्वरि योगभयंकरि।

सफल स्थावर जंगमस्य मुखं हृदयं मम वशमाकर्षयाकर्षय स्वाहा॥

इस मंत्र का 11 दिनों तक 11 माला प्रतिदिन जाप करने से वर या कन्या दोनों को 10 दिन में अवश्य सफलता मिलती है।

॥ विशेष ॥

ग्रहों की शांति का एक मौलिक नियम यह है कि जिस ग्रह पर पाप प्रभाव पड़ रहा हो और उसको बलवान किया जाना अभिष्ट हो; उससे संबंधित रत्न आदि धारण किया जाए तथा जो ग्रह अपनी युति अथवा दृष्टि से पीड़ा प्रदान कर रहा हो, उस ग्रह की पूजा, मंत्र जप अथवा व्रत आदि द्वारा शांति करवाई जाए। फिर भी जानकार की सलाह जरूर लें।

मंगल कवच

यह मंगल कवच प्रत्येक कष्टों का निवारक, समस्त सिद्धियों को देनेवाला, सौभाग्य-प्रदायक, कारागार एवं समस्त बंधनों से छुड़ाने वाला है।

विनियोग :

अस्य श्रीअंगारककवचस्तोत्रमंत्रस्य कश्यपऋषिः, अनुष्टुप्छंदः, अंगारको देवता, भौमप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

॥ ध्यान ॥

रक्ताम्बरो रक्तवपुः किरीटी
चतुर्भुजो मेषगमो गदाभृत्।
धरासुतः शक्तिधरश्च शूली
सदा मम स्याद् वरदः प्रशांतः॥

॥ कवचम् ॥

अंगारकः शिरोरक्षेन्मुखं वै धरणीसुतः।
श्रवौ रक्ताम्बरः पातु नेत्रे मे रक्तलोचनः॥
नासां शक्तिधरः पातु मुखं मे रक्तलोचनः।
भुजौ मे रक्तमाली च हस्तौ शक्तिधरस्तथा॥
वक्षः पातु वरांगश्च हृदयं पातु रोहितः।
कटिं मे ग्रहराजश्च मुखं चैव धरासुतः॥
जानुजंघे कुजः पातु पादौ भक्तप्रियः सदा।
सर्वाण्यन्यानि चांगानि रक्षेन्मे मेषवाहनः॥
य इदं कवचं दिव्यं सर्वशत्रुनिवारणम्।
भूत-प्रेत-पिशाचानां नाशनं सर्वसिद्धिदम्॥
सर्वरोगहरं चैव सर्वसम्पत्प्रदं शुभम्।
भुक्ति-मुक्तिप्रदं नृणां सर्वसौभाग्यवर्धनम्॥
रोगबंध-विमोक्षं च सत्यमेतन्न संशयः॥

श्रद्धापूर्वक जो भी इस कवच का पाठ करता है, निश्चित रूप से उसके शत्रुओं का नाश होता है। उसके सौभाग्य में सर्व प्रकार से वृद्धि होती है।

ऋणमोचक मंगल स्तोत्र

यह स्तोत्र विशेष रूप से उनके लिए लाभप्रद है, जो ऋण के भार से दबे हुए या संत्रस्त हैं। इसके पाठ से तन नीरोगी एवं स्वस्थ होता है तथा घर में लक्ष्मी का प्रचुर रूप में वास होता है—उसे दूसरा कुबेर जानो।

मंगलो भूमिपुत्रश्च ऋणहर्त्ता धनप्रदः।
स्थिरासनो महाकायः सर्वकर्मावरोधकः॥
लोहितो लोहितांगश्च सामगानां कृपाकरः।
धरात्मजः कुजो भौमो भूतिदो भूमिनंदनः॥
अंगारको यमश्चैव सर्वरोगापहारकः।
वृष्टेः कर्ताऽपहर्ता च सर्वकाम फलप्रदः॥
एतानि कुजनामानि नित्यं यः श्रद्धया पठेत्।
ऋणं न जायते तस्य धनं शीघ्रमवाप्नुयात्॥

धरणी गर्भसंभूतं विद्युत्कान्ति-समप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं च मंगल प्रणमाम्यहम्॥
स्तोत्रअंगारकस्यैतत् पठनीयं सदा नृभिः।
न तेषां भौमजा पीडा स्वल्पाऽपि भवति क्वचित्॥
अंगारक! महाभाग! भगवन्! भक्तवंत्सल।
त्वां नमामि ममाशेषमृणमाशु विनाशय॥
ऋणारोगादि-दारिद्र्यं ये चाऽन्ये ह्यपमृत्यवः।
भय-क्लेश-मनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा॥
अतिवक्र! दुराराध्य! भोगमुक्तजितात्मनः।
तुष्टो ददासि साम्राज्यं रुष्टो हरसि तत्क्षणात्॥
विरिन्चिशक्रविष्णूनां मनुष्याणां तुका कथा।
तेन त्वं सर्वसत्त्वेन ग्रहराजो महाबलः॥
पुत्रान् देहि धनं देहि त्वामस्मि शरणं गताः।
ऋणदारिद्र्यदुःखेन शत्रूणां च भयात्ततः॥
एभिर्द्वादशभिः श्लोकैर्यः स्तौति च धरासुतम्।
महतीं श्रियमाप्नोति ह्यपरो धनदो युवा॥

अंगारक स्तोत्र

अंगारक स्तोत्र का पाठ करने से मंगल शांत व शुभ बनता है। जो लोग अनेक पुष्पों से मंगलवार के दिन मंगल की पूजा करते हैं, उनकी संपूर्ण ग्रहों की पीड़ा नष्ट हो जाती है। उन्हें समस्त प्रकार के सुख-ऐश्वर्य प्राप्त होते हैं।

विनियोग

अस्याऽऽगारकस्तोत्रस्य विरूपांगिरस ऋषिः, अग्निर्देवता, गायत्रीच्छंदः, भौम-प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

स्तोत्रम्

अंगारकः शक्तिधरो लोहितांगो धरासुतः।
कुमारो मंगलो भौमो महाकायो धनप्रदः॥
ऋणहर्त्ता दृष्टिकर्त्ता रोगकृद्रोगनाशनः।
विद्युत्प्रभो व्रणकरः कामदो धनहृत् कुजः॥

सामगानप्रियो रक्तवस्त्रो रक्तायतेक्षणः।
लोहितो रक्तवर्णश्च सर्वकर्मावरोधकः॥
रक्तमाल्यधरो हेमकुण्डली ग्रहनायकः।
नामान्येतानि भौमस्य यः पठेत् सततं नरः॥
ऋणं तस्य हि दौर्भाग्यं दारिद्र्यं च विनश्यति।
धनं प्राप्नोति विपुलं स्त्रियं चैव मनोरमाम्॥
वंशोद्योतकरं पुत्रं लभते नाऽत्र संशयः।
योऽर्चयेदह्नि भौमस्य मंगलं बहुपुष्पकैः।
सर्वा नश्यति पीडा च तस्य ग्रहकृता ध्रुवम्॥

इस स्तोत्र का नित्य पाठ दारिद्र्य का हरण कर सौभाग्य प्रदान करने वाला है। इसके पाठ से विपुल धन तथा सुंदर स्त्री की प्राप्ति होती है। ऋण मुक्ति के लिए भी इस स्तोत्र का पाठ करना चाहिए। प्रत्येक प्रयोग में श्रद्धा और धैर्य महत्वपूर्ण तथ्य है; इस बात का विशेष ध्यान रखें।

टोटके एवं उपाय

मंगल के बारह भावों में स्थित होने पर उसके अलग-अलग उपायों की चर्चा लाल किताब में की गई है। किसी योग्य एवं अनुभवी विद्वान से यह निश्चित हो जाने पर कि मंगल की स्थिति किस घर में है, इन उपायों को करना चाहिए। अनुकूल प्रभाव होगा। मंगल की क्रूर दृष्टि सौम्य हो जाएगी।

प्रथम भाव : सद्ग्रंथों का पाठ करें।

द्वितीय भाव : रेवड़ियां पानी में प्रवाहित करें। बिजली का कारोबार करें। भाइयों से मदद हासिल करें। घर में मृगचर्म रखें।

तृतीय भाव : हाथी-दांत की बनी

वस्तुएं घर में रखें। सफेद रंग की वस्तुएं पास रखें। चांदी की अंगूठी बाएं हाथ की उंगली में धारण करें।

चतुर्थ भाव : 400 ग्राम चावल दूध में धोकर 14 दिनों तक किसी पवित्र नदी की जलधारा में प्रवाहित करें अथवा चंद्र का उपाय करें। तीन धातु अर्थात् त्रिलौह की अंगूठी धारण करें।

पंचम भाव : रात को सिरहाने पानी रखें तथा सुबह उसे किसी पौधे में डाल दें या स्वयं पी लें। घर के आंगन में नीम का पेड़ लगाएं।

षष्ठम भाव : कन्या की पूजा करें तथा चांदी या चावल का दान दें। बच्चों को सोना न पहनाएं।

सप्तम भाव : चांदी की ठोस गोली

सदैव अपने पास रखें। बहन, कन्या, मौसी, बुआ व साली आदि को मिठाई खिलाएं। शनि को उच्च बनाएं। मकान या दीवार बनवाएं। चढ़ती बेल न लगाएं।

अष्टम भाव : किसी योग्य पंडित से मंगल की शांति का उपाय करवा कर त्रिलौह की अंगूठी धारण करें। तन्दूर की सिंकी रोटियां कुत्तों को खिलाएं।

नवम भाव : लाल रंग के रूमाल का प्रयोग करें। मंगलवार को हनुमानजी को सिंदूर चढ़ाएं। बड़े भाई की आज्ञा मानें तथा भाभी की सेवा करें।

दशम भाव : हनुमानजी की उपासना तथा सुंदरकांड का अखंड पाठ करें। मीठा भोजन करें। हिरण पालें। दूध उबलकर जमीन पर न गिरने दें।

एकादश भाव : हनुमानजी की सेवा विशेष फलदायी होती है। काला-सफेद कुत्ता पालना लाभकारी होगा। मिट्टी के बरतन में सिंदूर व शहद रखकर उसे घर में स्थापित करें।

द्वादश भाव : धन प्राप्ति के लिए मीठा स्वयं खाएं और दूसरों को खिलाएं भी। सिर पर चोटी रखें तथा खाकी रंग की टोपी पहनें। जल में गुड़ डालकर उसका अर्घ्य सूर्य को दें।

विशेष

मंगल उच्च हो और भाग्यदायक भी लेकिन अस्थायी हानि पहुंचा रहा हो, तब ऐसी स्थिति में मंगल का उपाय न करें। बल्कि भगवान राम के मंत्र का जप-ध्यान करें। मंगल का कुप्रभाव शांत होगा, और समय बीतने पर मंगल से ही भाग्योदय भी होगा।

रत्न धारण

मंगल ग्रह का रत्न है मूंगा। लेकिन इसे धारण करने से पहले अपनी कुंडली किसी अनुभवी ज्योतिषी को दिखाएं। उसके परामर्श से ही इसे धारण करें, क्योंकि यह रत्न सभी स्थितियों में मंगली स्त्री-पुरुषों के लिए अनुकूल नहीं होता।

दान की वस्तुएं

मूंगा, पीले रंग की गाय अथवा लाल रंग का बैल, सोना (सुवर्ण), लाल वस्त्र, मसूर, रक्त चंदन, गुड़, घृत, केसर, कस्तूरी, गेहूं, लाल कनेर के फूल तथा धन के रूप में कुछ दक्षिणा आदि वस्तुएं दान करने से मंगलकृत पीड़ा दूर होती

है। ऋण से छुटकारा मिलता है। ब्लड प्रेशर जैसे रोगों से मुक्ति पाने के लिए यह अचूक उपाय है।

औषध-स्नान

रक्त चंदन, लाल पुष्प, बेल की छाल, जटामांसी, मौलश्री, खिरैंटी, हींग, गोंदनी, मालकांगनी तथा सिंगरफ मिश्रित जल से स्नान करने पर मंगलजनित पीड़ा का अतिशीघ्र निवारण हो जाता है। यह स्नान मंगलवार को प्रात: करना चाहिए।

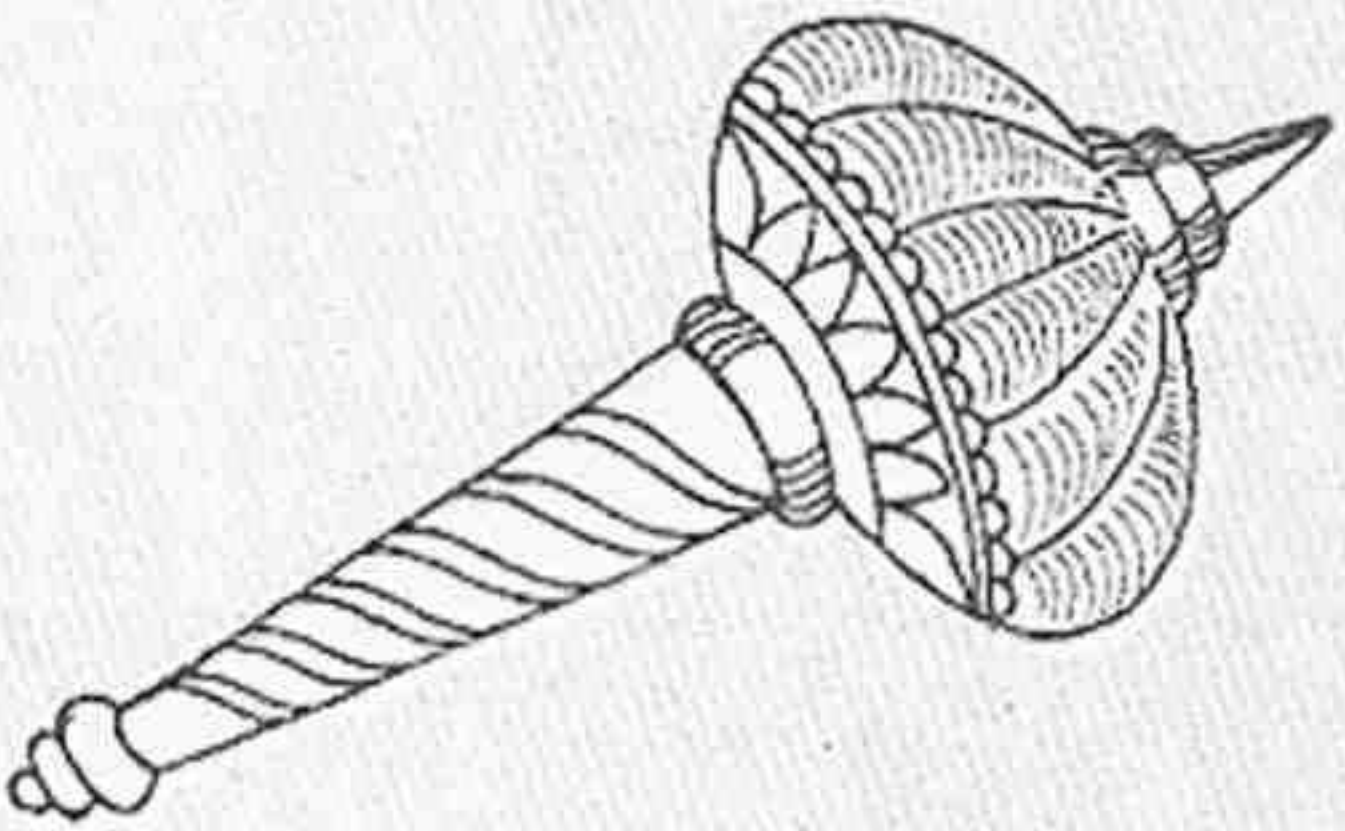

श्री बजरंग बाण

॥ दोहा ॥

निश्चय प्रेम प्रतीति ते, विनय करैं सनमान।
तेहि केकारज सकल शुभ, सिद्ध करैं हनुमान।

जय हनुमन्त सन्त हितकारी।
सुन लीजै प्रभु अरज हमारी॥
जन के काज विलम्ब न कीजै।
आतुर दौरि महा सुख दीजै॥
जैसे कूदि सिन्धु महिपारा।
सुरसा बदन पैठि विस्तारा॥
आगे जाय लंकिनी रोका।
मारेहु लात गई सुरलोका॥
जाय विभीषन को सुख दीन्हा।
सीता निरखि परमपद लीन्हा॥

बाग उजारि सिन्धु महं बोरा।
अति आतुर जमकातर तोरा॥
अक्षय कुमार को मारि संहारा।
लूम लपेट लंक को जारा॥
लाह समान लंक जरि गई।
जय जय धुनि सुरपुर में भई॥
अब विलम्ब केहि कारन स्वामी।
कृपा करहु उर अन्तर्यामी॥
जय जय लखन प्राण के दाता।
आतुर होय दुःख करहु निपाता॥
जै गिरिधर जै जै सुख सागर।
सुर समूह समरथ भटनागर॥
ॐ हनु हनु हनु हनुमन्त हठीले।
बैरिहि मारु बज्र की कीले॥
गदा बज्र लै बैरिहिं मारो।
महाराज प्रभु दास उबारो॥

ॐ कार हुंकार महाप्रभु धावो।
बज्र गदा हनु विलम्ब न लावो॥
ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमन्त कपीसा।
ॐ हुं हुं हुं हनु अरि उर शीशा॥
सत्य होहु हरि शपथ पायके।
राम दूत धरु मारु जाय के।
जय जय जय हनुमन्त अगाधा।
दुःख पावत जन केहि अपराधा॥
पूजा जप तप नेम अचारा।
नहिं जानत हौं दास तुम्हारा॥
वन उपवन मग गिरि गृह माहीं।
तुम्हरे बल हम डरपत नाहीं॥
पांय परौं कर जोरि मनावौं।
येहि अवसर अब केहि गोहरावौं॥
जय अञ्जनि कुमार बलवन्ता।
शंकर सुवन वीर हनुमन्ता॥

बदन कराल काल कुल घालक।
राम सहाय सदा प्रतिपालक॥
भूत, प्रेत, पिशाच निशाचर।
अग्नि बेताल काल मारी मर॥
इन्हें मारु, तोहि शपथ राम की।
राखउ नाथ मरजाद नाम की॥
जनकसुता हरि दास कहावो।
ताकी शपथ विलम्ब न लावो॥
जै जै जै धुनि होत अकासा।
सुमिरत होत दुसह दुःख नाशा॥
चरण शरण कर जोरि मनावौं।
यहि अवसर अब केहि गोहरावौं॥
उठु उठु चलु तोहि राम दुहाई।
पांय परौं कर जोरि मनाई॥
ॐ चं चं चं चं चपल चलंता।
ॐ हनु हनु हनु हनुमंता॥

ॐ हं हं हांक देत कपि चंचल।
ॐ सं सं सहमि पराने खल दल॥
अपने जन को तुरत उबारो।
सुमिरत होय आनंद हमारो॥
यह बजरंग बाण जेहि मारै।
ताहि कहो फिर कौन उबारै॥
पाठ करै बजरंग बाण की।
हनुमत रक्षा करै प्राण की॥
यह बजरंग बाण जो जापै।
ताते भूत-प्रेत सब कांपै॥
धूप देय अरु जपै हमेशा।
ताके तन नहिं रहै कलेशा॥

॥ दोहा ॥

प्रेम प्रतीतिहि कपि भजै, सदा धरै उर ध्यान।
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करैं हनुमान॥